बार्सिक रिपोर्ट 2009–10

सुजाग्रति समाज सेवी संस्था पहाडगढ मुरैना

सुजाग्रति समाज सेवी संस्था मुरैना 11 साल से सफलतापूर्वक कार्य कर रही है ।– जब हम जिला और प्रदेष के पैमाने पर अपनी स्थिति का ऑकलन करते है तो हमारे ये काम अत्यन्त उपयोगी व प्रासंगिक नजर आते है। इससे यह प्रष्न उठता है कि जव हम और अधिक ठोस तरीके से इसे समझते है और इसकी व्याख्या करते है तथा इसकी उपलब्धियों पर आनंदित होते है, एसी स्थिति में हम सुजाग्रति के लक्ष्य और दृस्टि के संदर्भ में किस प्रकार इसके प्रभावों को माप सकते है। कहा जाय तो रोज बदलती इस बंधनमुक्त दुनिया के परिपेक्ष्य में हमारे ये काम जरूर अंतर पैदा करते है। कार्य का विवरण इस प्रकार है –

स्मॉल ग्रान्ट प्रोग्प्रम सी ई ई/ यू एन डी पी दिल्ली के तहत संस्था द्वारा किया गया कार्य–

3000 मी. डौरबन्दी कार्य :–

उददेश्य :– 200 हेक्टेयर जमीन तत्काल रूप से बीहड में परिवर्तित हो रही थी इसलिये इसे बचाने के लिये 3000 मी. डौरबन्दी कार्य सुजाग्रति समाज सेवी संस्था, ग्रामीण जन ग्राम पिपरई एवं जैव विविधता प्रबन्धन समिति द्वारा ब्म् देहली के सहयोग से कराई गई जिससे एक तरफ 200 हेक्टेयर जमीन बीहड कटाव से बची तथा दूसरी तरफ पानी रूका जिससे जमीन का बाटर लेवल ठीक हुआ तथा इससे फसल अच्छी होंगी

डौर का अकार नीचे चौडाई 6 फीट , उचाई तीन फीट तथा उपर चौडाई एक फीट बनाई गई। इसके बीच में जल निकास नालियॉ बनाई गई जिससे ज्यादा पानी भरने पर ये फूटे नही जल निकास नाली पक्की सीमेंट से बनाई गई है। 20 गुणा 3 फीट की नीव तीन फुट नीचे तथा तीन फुट उपर , प्राजेक्ट के अनुसार यह डौरबन्दी कार्य 1800 मीटर किया जाना था किन्तु संस्था व ग्राम वासियों के सहयोग से यह 3000 मीटर किया जायेगा तथा अभी तक 18 जल निकास नालियॉ बनाई जा चुकी है।

डौरबन्दी से प्रषन्न हितग्राही किसान

जल निकास नाली :–

उददेष्य :– डौरबन्दी कार्यक्रम में पक्की सीमेंट जल निकास नालियॉ इसलिये बनाई गई क्योंकि जव बरसात का पानी ज्यादा बरसेगा तव इन जल निकास नालियो से पानी निकल कर चला जायेगा तथा मिटटी की डौर नहीं टूटेगी।

जल निकास नाली का आकार या साइज –

दो फीट चौडी तथा 20 फीट लम्बी बनाई गई है पत्थर एवं सीमेंटेड इस प्रोजेक्ट में जल निकास नालियॉ बनाना है अभी तक 18 का निर्माण हो चुका है । इनसे डौर की सुरक्षा एवं बीहड कटाव रूकेगा तथा उपजाड भूमि कटने से बचेगी।

जल निकास नाली की कोपिंग करते हये।

प्लान्टेषन :–

8000 पेडों का प्लान्टेषन कार्यक्रम संस्था तथा बी एम सी द्वारा दिनांक 15 जुलाई 08 से 15 अगस्त 08 तक तथा 2000 पेडों का रोपण जुलाई 09 में किया गया 20 हेक्टेयर बीहड जमीन पर बाबादेवपुरी के स्थान के चारों तरफ।

उददेष्य :–

गूगल के पेड का प्लांटेषन इसलिये किया गया क्योकि पी. व्ही. आर. (लोक जैव विविधता पंजी) से यह निकलकर आया कि गूगल का पौधा प्रायः यहॉ से लुप्त होता जा रहा है यह प्रजाति संकटमय थी इसलिये इसका संरक्षण एवं संबर्धन हो सके व बीहड कटाव रूक सके साथ ही साथ इसका गोंद 250 रू किलो विकता है इससे स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को जोडकर उनकी आयबृद्धि हो सके तथा जल संरक्षण को देखते हुये , क्लाइमेट चेंज को देखते हुये किया गया।

कटिंग रोपण के बाद का चित्र।

प्रोजेक्ट कार्यक्षेत्र का निम्न व्यक्तियों द्वारा विजिट किया गया –

1. डॉ0 मोनी थॉमस– बैज्ञानिक जबलपुर कृसि विश्वविद्यालय से।
2. डॉ0 अतुल श्री वास्तव – बैज्ञानिक जबलपुर कृसि विश्वविद्यालय से ।
3. डी एफ ओ वन विभाग मुरैना श्री लुखमान जी।
4. एस डी ओ वन विभाग मुरैना एल एन कुशवाह।

एस डी ओ वन विभाग श्री एल एन शर्मा एवं जाकिर हुसैन कार्यक्षेत्र का भ्रमण करते हुये ।

डॉ0 मोनी थॉमस बैज्ञानिक कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर, डॉ अतुल श्रीवास्तव जबलपुर , एल एन कुशवाह एस डी ओ वन विभाग, डी एफ ओ लुखमान व जाकिर हुसैन गूगल नर्सरी का भ्रमण करते हुये।

स्वयं सहायता समूहों की मासिक बैठकों में भागीदारी व बी एम सी की बैठकों में भागीदारी –

संस्था द्वारा दिसम्बर माह में स्वयं सहायता समूहों की बैठक में भागीदारी की तथा उनके दस्तावेजों को दुरस्त करबाया इसी तरीके से जैव विविधता प्रवंन्धन समिति की बैठकों में भागीदारी की व उनके दस्तावेज दुरस्त कराये व इसी माह में प्राजेक्ट का ब्रोसर निर्माण भी किया गया।

गूगल प्लांटेषन की निदाई गुडाई एवं सफाई :–

प्लान्टेषन की सर्वप्रथम परदेषी बबूल जो पेड के उपर आ गये थे उन की कटिंग कराई गई तथा पेड के बर्सात में थाले टूट गए वह बनवाऐ एवं पेडों की निदाई गुडाई करवाई यह कार्य एक 1 जनवरी 10 से 30 जनवरी 10 तक कराया गया।

उददेश्य –

क्योंकि गूगल का पौधा यहॉ से लुप्त होने की कारण ही गलत तरीके से गोंद निकालना है इसलिये यह प्रषिक्षण कराया गया इस प्रषिक्षण में गूगल की बीमारीयों पर भ्झी जानकारी दी गई जिसमें यह निकल कर आया कि यहॉ सबसे ज्यादा दीमक से पेड मर रहे है।

प्लान्टेषन की निंदाई गूडाई करते हुये।

प्लान्टेषन में पानी तथा दीमक की दवा डलवाई एक फरवरी 10 से 10 फरवरी 2010 तक प्लान्टेषन में दीमक की दवा एवं पानी डलवाया गया।

उददेश्य –

पेडों की ग्रोथ के लिये पानी एवं दीमक की दवा डलवाना अति आवष्यक है ।

पानी गूगल प्लान्टेषन में देते हुये मजदूर।

8 जनवरी 2010 को ग्राम पिपरई का पुरा तथा 9 जनवरी 2010 को चम्बल नदी के किनारे हनुमान मन्दिर पर ग्राम एसा में गूगल से गोंद निकालने के लिये विनाषहीन विदोहन की प्रक्रिया पर एक एक दिवसीय प्रषिक्षण का आयोजन किया गया।

उददेश्य – चूंकि गूगल के पौधे के लुप्त होने का कारण गलत तरीके से गोंद निकालना है इसलिये विनाषहीन विदोहन की प्रक्रिया पर प्रषिक्षण कार्यक्रम कराया गया।

प्रषिक्षण लेते हुये किसान गूगल गोंद पर।

बताते हुये।

निषक्तों की प्रतियोगिता :–

उददेश्य – विकलांगों का आत्मबल बढानें के लिये सामाजिक न्याय विभाग के साथ निषक्तों की प्रतियोगिता कराई गई।

दौडते हुये निषक्त।

वन अधिकार अधिनियम का अध्ययन :–

उददेष्य – वन अधिकार अधिनियम का इम्लीमेंट ठीक नहीं होने के कारण आवष्यकतानुसार लोंगों को अधिकार पत्र नहीं मिल पाये इसका सही इम्प्लीमेंट कैसे हो इस हेतु न्छक्च के सहयोग से समर्थन समर्थन में तथा समर्थन के सहयोंग से हमारे द्वारा मुरैना व ष्योपुर जिले में रिसर्च दल बना कर अध्ययन किया गया।

दुलारीबाई नाटक का मंचन :–

उददेष्य – संस्था द्वारा महिला सषक्तिकरण एवं खेत का पानी खेत में गॉव का पानी गॉव में रूके इस हेतु डौरबन्दी कार्यक्रम किया जाये इस उददेष्य को लेकर दुलारीबाई नाटक का मंचन ग्रामीण स्तर, षहरी स्तर पर तानसेन संगीत अकेडमी ग्वालियर द्वारा कराया गया।

कृसि विज्ञान मेला :—

उददेष्य :— जिला स्तर के कृसि विज्ञान मेले में जैविक खेती किसानी एवं यंत्र संयत्र के विषय मे विषय विषेषज्ञों द्वारा विस्त्रत जानकारी दी इस मेले में दोनों गॉव से 20—20 कृसकों की भागीदारी संस्था द्वारा कराई गई कृसि के विसय में तकनीकि एवं उपकरणों की तथा बीज ,खाद, फसलचक्र की जानकारी प्राप्त की।

कृषि विज्ञान मेले को सम्बोधित करते हुये श्री जाकिर हुसैन।

अध्यक्ष
सुजाग्रति समाज संस्था
मुरैना म0प्र0